

कविता पाठकक लेल अवश्य पठनीय

सोमदेवक : काकानि

जीदकान्तक : नाचू दे पुष्पी

कीर्तिनारायण मिश्रक : सीमान्त आ

इम स्वयं नहि लिखम

रमानन्द रेणुक : ओकरे नाम आ

अमलता

उदय चन्द्र भा 'विमोदक' : संकान्ति

सौख्य अपला पर आ

पदना स्थिति मे

बुकान्त सोमक : निज सम्पादकता द्वारा

महा प्रकाशक : कविता सम्मन्ता

रामलोचन ठाकुरक : इतिहासवंता आ

प्रतिबन्धि (अनु०)

कुणालक : सीताक नाम

अग्निपुष्पक : सहस्रबाहु

आरुं हरीं
आजुक कविता

रामलोचन ठाकुर
प्रकाशक

आजुक कविता



सम्पादन
राम लोचन ठाकुर



अरुणोदय प्रकाशन, कलकत्ता

आजुक कविता

सर्वाधिकार : अरुणोदय प्रकाशन, कलकत्ता

प्रकाशक :

अरुणोदय प्रकाशन

३३/५, डा० देवदार रहमान रोड,

कलकत्ता-७०००३३

पहिल प्रकाश : विद्यावृत्ति स्मृति दिवस, १३६१ (नवम्बर, १९८४)

मूल्य—पाँच टाका

मुद्रक :

प्रायनियर आर्ट प्रिंटस,

कलकत्ता-५

Aajuk Kavita (1984)

Malithili

Edited by / Ram Lochan Thakur

Rs. 5/-Only

अपना दिस सं

** आजुक कविता वर्तमान परिवेश प्रसूत मानसिकताक प्रतिफलन थिक. ओना आइयो रजनी-सजनी लिखले जाइए—परञ्च से आजुक कविता नहि.

** इच्छा रहितहुं सभ कविक रचनाक समावेश नहि क पाओल. किछु रचना-कारक असहयोग आ किछु आर्थिक अभावेटा तकर कारण.

** एहि पोथीक पाछां एकेटा उद्देश छल जे आजुक कविताक स्पष्ट चित्र एके पोथी द्वारा पाठकक समक्ष उपस्थित कएल जा सकए. से कतेदूर धरि भ पाओल से त पाठके लोकनि कहि सकताह.

** कवि परिचितिक अभाव रहि गेल. ओना पोथीक कोनो कवि मैथिलीक पाठक सं अपरिचित त नहिजे छथि. संगहि कविक असल परिचय त हुनक रचनाए ने थिक.

** ई पोथी स्वर्गीय रामकृष्ण झा 'किछुन' ओ राज कमल चौधरीक स्मृति में समर्पित अइ.

—राम लोचन ठाकुर

मेरी माता

क्रम	पृष्ठ
१. सोमदेव :	
ग्रामवाला	१
२. जीवकान्त :	
आत्म भक्षी	६
छेनी	७
३. कीर्ति नारायण मिश्र :	
भिनसर भ' गेल अछि	८
एहि अन्ध गुफा मे	९
४. रमानन्द रेणु :	
आजुक स्थिति मे	११
मात्र अपना लेल	१२
५. वीरेन्द्र मल्लिक :	
अस्ताचलगामी सूर्य के प्रणाम	१५
समानधर्माक नाम	१७
६. उदय चन्द्र भा 'विनोद'	
मैडमक नाम एकटा अपील	१६
डाइन	२२
७. सुकान्त सोम :	
हाल-समाचार	२४
हमर एकटा गाम रहय	२५
८. महाप्रकाश :	
जानौक विरोध मे	२७
बयान	२६
९. कुलानन्द मिश्र	
ओना कहबाक लेल बहुत किछु छल हमरा लग	३०
अपना गामक नाम एकटा शोक गीत	३२

१०.	रामलोचन ठाकुर :	
	अजगुत देश	३८
	एहि संपत्तीस बरस मे	४२
११.	कुणाल :	
	युद्ध प्रसंग (१)	५०
	युद्ध प्रसंग (२)	५१
१२.	अग्निपुष्प :	
	इजोतक लेल	५३
	भोर	५५
१३.	विभूति आनन्द :	
	मोह	५६
	ओ परदेशी	५६

—:०:—

सोमदेव

ग्रामवाला

ग्रामवाला जकरा हिन्दी में कहैछ 'गाँव की गोरी'

हमरा फिलिम में भेटली

गाम में नहि ।

आब त' बाजू, की सूति, की पाति, की हंसुली, की ईरकस

की बुलाकी, की कारा, की छारा

नगरीय प्रदेशों में भेटत

ब्रह्मबाबाक धाम में नहि ।

△

छायावाद युगक गाम

कोनो पहाड़ी विहारस्थलीय गाछसमूह पर रहल होयत

जाहि गाछ सभकेँ पाँखि जनमि गेल

कोनो हँकल डाइनक आँखि रमि गेल ।

△

आ' प्रयोगवादक गाम ?

कतहु विरुप आत्माक लोक में हुआए । किनसाइत ओतय

अपनहि अपन अपन कविता पढ़ि पढ़ि

सुरासरोवर में

मूढ़ डोलबैत हुआए वकपंचायत ।

△

आ' किछु नवका लक्ष्यहीन अनाम गामक नगर कविता ?

ई त' अकविता अछि

मिस्तिनक नाम, की मीताक नाम

प्रीतिनक नाम, की नाराबाजीक पत्नीताक नाम

आजुक कविता]

की अबूझ कल्पवृक्ष पपीताक नाम
की नगर । की गाम
नवीनताक लेल गहने नवीनताक छाँहि ।
भोतिआयल आयातित डिस्कोटाइप आधुनिकताक बाँहि

△

यैह सभ सोचैत खोचैत एक दिवस
ग्रामवालाक तलास मे नगर तजि
अयलहुँ अपन गाम । आ' कि
अपनहि अपनहि एकसरे मिशीन भऽ गेलहुँ
पारदर्शी भ' गेल सोझाक नूँआ । से राडाक
दूरबीन भ' गेलहुँ
तार तार माँड भ' गेल नूँआक आर पार
फाटल पेओन आ' सड़ल चेफड़ी केँ काछि काछि
साफ सुभा रहल छल सुखायल गाछक पीयर कटहरक
खोघल तोघल माँसु-ताँसु आँठी-ताँठी छस्ता-तस्ता
— एतय, एहि नमन स्टेडियम ला
कोनो रोक नहि । डाठ नहि । मेलाक डाठ नहि

△

मुदा बंधु !
एहि दृश्यक कारवाँ केँ । कारी चश्मा है देखबाक लेल
पाषाणपद्धतिबद्ध दृष्टि चाही । हमर तरल नयन नहि
हमरा त' द्वारे पर साफ साफ दुर्गाक चिनमारि नजरि पड़ली
बिना हस्ताक तरुआरि नजरि पड़ली
आदमक खण्डहरि मे दनमनायल मानिकथम्ह धयने
नजरि पड़ली सह-सह करैत माता विश्वरूपा !
ओ जँ थूकि देखि त' बहि जयतीह
धनवती फैसनक फेस्टून अनेको अलंकाररूपा
नखरंजनी । मानभंजनी । कुलभंजनी

नबकी पतरकी कारसन होटलकात सड़क पर
ओलझैत प्लास्टिक-वाला । रंगरौगन चढ़ल
कागतक माला

एतय नहि भेटत कतहु
नगर बाबू लोकनिक नीलगातावला उपन्यास सभ मे
भेटत कतहु कतहु ।
हम एतय खुचनवन टेढ़, अमती काँटसन बढ़ल,
खुरसन फाटल नऽह देखल । मुदा साँच कहै छी
ओइ मे एकोरत्ती नखराक बिख नहि रह्य ।
बोंब जकाँ केशो देखल । जे ब्यूटी-पारलक मे
स्मार्ट नौआ द्वारा नहि कतरल छल
मलेरिया, टाइफाइड आकि ममरखा द्वारा
कतरि देल गेल छल

कूड़ापात्र सँ बीछल मालक कबाड़ी-काउन्टर सन । एकटा
आदम तन । कल्प उड़ल दर्पन
मूँत सँ सड़ल बिछाओनक पेओन पर लीखल
बिथिला शेलीक काँटक गाछ । आ' नाम गुलबदन
तलाकग्रस्त माया जकाँ
हे यौ ! हमरा त' गामक काया नहि लागल
मानवकी काया जकाँ ।

△

भीत सभ पर उगल पीपर
फाट सँ बहराइत करैत
माटि पर पड़ल चिह्नका
पटिया मे लेपटाइल बाण
मलकिनीक आँगन मे देह तोड़ैत " ... अबैत टगहनैत
म्याऽ ... म्याऽऽ ... म्याऽऽऽ

खुदा तोड़ते गाय

अपने गोबर में गौतल निडहेस चिबवैत

मूँत चटैत बकरौं

अपने जीहक पाजु करैत महीस.....

(आह ! अहूँ बेर वरखा नहि भेल !)

हुँआऽ...हुँआऽऽऽ

नदिया की मँगैत अछि ?

राति में गेल ...

आब कुँडली जकाँ उठत खसत धूँआ

जिम्भरक फुनगी पर । लंक लेत गिरगिट

बाजत टिकटिकिया

धुसुकि आयत कूकुर

चूल्हिक मूँह छा । ऐंठ कूठ ल' क'

आबि गेली म्या

किछु ने किछु करबे करत भूज-भाज

राखबे करत लोक लाज

पखारत अलमुनियौक बाटी.....

खेलायत भगता । देत गारि । मारत चाटी ...

सभटा सहती माय

ग्रामवाला । वयः सन्धिष पर भखरि गेली, हाय !!

△

ग्राम में ग्रामवाला कतय ?

रोगिनी आ कि माया

रस्ता-पेड़ा, बहरी-बसबाड़ि में । के सोझवैत अछि

सन्बन्ध । सम अपना अपना में अंध

चामक ओहार उठवैत

हारक अकालगुहा सँ बहरा ...ससरैत । चल अवैत

कीड़ा आ पीछु जकाँ फुदकैत । जेरक जेर

एकक बाद दोसर शिशु.....

तौला सन पेट । ओइध सन टोंग

गन्हाइल बेलसन कप्पार

जनमैते चूबैत राब । जेना

सोइरिष में द' देल गेल हुआए जुलाब !

फाटल बोखिया सं खसैत साबूत दाना

ए'ऽ ए'ऽऽ ए'ऽऽऽ

नव हरमुनियौ । फाटल भाथी । बेसुर गान बजवैत

के फुर दै निकल जाइछ घाट पर

कदम तर । घाट पर

लटकौने ट्रांजिल्टर । लुंगी आ' रंगीन गंजी

चमेली आ' ताड़ी महका गेल

बोल सहका गेल —

'गोरी तोर गाँव घड़ा प्यारा ।'

△

मुदा हमर ई गाम त' ओइन रंगीन चित्र नहि अछि ।

आ' कि धोला मैल

हमर ई गामे नहि अछि मित्र ! नहि अछि ?

—:०:—

जीवकान्त

आत्मभक्षी

अपन नाम माटिपर लिखि कऽ
ओकर परिक्रमा चलैत अछि
अहर्निश
अहंकारक रत्न-जटित प्रतिमा केँ
दिन-राति पूजल जाइत अछि
सभसँ वरेण्य आ सभसँ पूजनीय
आइ अपने स्वरूप अछि
पोखरिक कछेरमे ठेहुन मोड़ने ठाढ़
पानिक दर्पणमे
अपने स्वरूप केँ मुग्ध भऽ निहारैत
आजीवन अपने सौंदर्यक महिमामे
गीत गवैत लोक
सगरो संसारमे अछि
लोक अपनाकेँ खयबामे लागल अछि
अहंकारक यमदंष्ट्रा से
कसाकस कऽ फाँसल लोक
तृप्त अछि
ओ अपना केँ
अपने दाँतसँ
कचकचा कऽ
चिवा रहल अछि
समस्त संसार आइ नष्ट होयवापर वृत्त अछि



छेनी

हमरा भीतर मे एक गोठ आकार-रहित
पाथरक खण्ड अछि
ओकरा अर्थ देवा लेल
थोड़ेक हमहुँ परिश्रम कयल अछि
जेना फुसैति मे छेनी-हथौड़ी सँ
ओकरा ठोक-ठाक कयल अछि
बेसी काल एहि पाथरक खण्ड पर
अहुँ लोकनि अपना मोन केँ
अपना छेनीसँ अंकित करैत रहलहुँ अछि
मुदा, से बात अहाँ लोकनिकेँ
बड़ थोड़ मोन होयत
काल हमरासँ आ अहाँसँ कनेक पैघ अछि
ओकरा हमरा लोकनि अपन जुत्ता तरमे
दाबऽ चाहैत छी
मुदा, ओ हमरा लोकनिक जुत्ताकेँ
मोजर नहि करैछ
कदाचित् ओकरा हाथक छेनी बेसी
बल्लार छैक ।
हमरा भीतरक पाथरक खण्ड
छेनीसँ सदा खोभल जाइछ
कोनो आकार देवाक बेगरता
सदिखन लागल रहैछ
मुदा पाथरक खण्ड
अन्तिम रूपसँ आकार पयबा लेल
व्यग्र बड़ थोड़ होइत अछि ।

कीर्तिनारायण मिश्र

भिनसर भ' गेल अछि

भिनसर भ' गेल अछि

टेबुलपर राखल अछि चाह आ अखवार

आओर दिन जकाँ आइयो बड़ी काल सँ

कौआ कठफोड़बा माल आ कूकुर

कैने अछि दिशा कें निनादित

आइयो सूर्यक लालिमा

कुहेस कें नहि चीर सकल

आ छाले भ' गेल सौंसे सरड धुआँइ

बासन केर खनखनाएव

गृह-स्वामिनी केर गरमाएव

भ' गेल अछि आरम्भ

बजर' लागल अछि कल पर डोल

भर' लागल अछि 'टव'

मधुमेहियासभ शुरू क' देने अछि घूमब

ओहिना सभ बात

स्थिर, घटनारहित, नियमित आ स्वाभाविक अछि

अखबारक पन्ना में आइयो अछि

हत्या, अरवाला, बलाकार, साम्प्रदायिक भिड़त-वर्तमान

ओहिना किछु कालक बाद

हम भ' जाएव बहार

सड़कक भीड़ देखि लगाएव जनसंख्या वृद्धिक अन्दाज

टी० पी०, टेलिफोन आ मासिकक बी० पी० देखि

शुरू करव काज

कौच मालक बढ़ैत दाम

आ तैयार वस्तुपर सक्त होइत सरकारी लगाम

हैत हमर चिन्ताक कारण

अपन विशांकु अस्तित्व कें विसरि

भरि दिन करैत रहव कौटिल्य संभाषण

भिनसर भ' गेल अछि आ ओहिना आजुक दिन बीत जाएत

□

एहि अन्ध गुफा मे

एहि अन्ध गुफा मे

पहिल सुरङ्ग सँ भ' कें

दोसर सुरङ्ग बहराएल छेक

दोसर सँ तेसर

लक्षाधिक सुरङ्गबला एहि गुफा कें

प्रत्येक सुरङ्ग पर बैसल छेक

वियुतजिह सूर्यनख वज्रदन्त बिडालाक्ष

ओ दवाड़ि रहल अछि

आ हम पड़ा रहल छी

उतर सँ दक्षिण

नदी सँ पहाड़

समुद्रतल सँ ग्रह-उपग्रह धरि

सभतरि प्रज्वलित भ' रहल अछि ओकर अग्निबधु

सभतरि प्रक्षेपित भ' रहल अछि ओकर यंत्र क्यूह

[आजुक कविता]

[आजुक कविता]

[६]

कहियो नहि दूट' बला मूछी
छीन' लेल हमर अंतिम सांस
ठाढ़ अछि ओकर मृत्युदूत
छेकने सभ बाट
हम कहिया सँ दू गोटे सुरङ्गक मध्य
छौह-बिण्ड जकौं गलि रहल छी
ओकर विवेकशून्य संकेत पर
विविध रूपाकार मे ढरि रहल छी ।

□

रमानन्द रेणु

आजुक स्थिति मे

आजुक स्थिति मे
हमरा सभ
सोनाक पिंजरा मे बन्न रहैत छी
आ आँखि मुनि
दूनू कान मे आंगुर दऽ कऽ
अनेरे चिचियाइत रहैत छी

गौआँ सभ
बुझैत अछि बताह
आ धकिया लैत अछि
घर आ घराड़ी

अनगौआँ सभ
छीनि लैत अछि मुहक ग्रास

आ हमरा सभ
चिचियाइत रहैत छी
आ सपनाक पिंजरा मे
बन्न रहैत छी ।

□

आजुक कविता ।

[आजुक कविता]

मात्र अपना लेल

आर

एकी पाती

हम लिखि नहि सकलहुँ

जिनगीक बाटपर

हमर अर्थी बाहर भ गेल छल

शब्दक जालमे फंसल

हम लहरिक प्रतिष्ठा करैत छी

मानव सं नहि

प्रत्युत मानवीयता सं डेराइत छी

पछिला बेर

दे हमरा विक्रि तरहेँ गछारने छल

आ अपन गर्म अंक मे

हमरा जिनगीक रस चटौने छल

किन्तु समय साक्षी आछि

हमर अस्तित्व

एकटा खटो सं गेल-बीतल अछि

स्तरक बात

भला हम की जानब ?

मात्र विरोधाभासे मे

जीवाक आदति पड़ि गेल अछि

धरतीक स्वर्णिम स्वप्न सं

अपना केँ फराक राखि

हम एकटा दुनिया बसौने छलहुँ

आ स्वयं कुमार लल

आ अपना सं हारि धाकल छल

एतेक पैघ नाम बाट

तय कयलाक पश्चात्

हम मात्र अर्थहीनताक राज पौलहुँ अछि

आ मात्र येह अर्थहीन जिनगी

जीवाक हेतु हम बिबश छी

जीवनक रक्तहीनता

शून्यता

आ पाप-बोधक दस्तावेज

हमर रचना अछि

शब्दक स्तूप

आ बिचारक धमनी

आइ वास्तविक छैक

समग्र

चेतनाक प्रतिफल

प्रतीति छैक

जीवन मात्र धोखा छैक

आवाजक बेर मे

बस एकेरा छवि छैक

जीवन सौँझ बनि गेल

हाथ किछु लागल नहि

तयो हम चलेत छी

स्वयं के धोखा देत

हम आगाँ बढ़ैत छी

काजुक वन
 का किरण ल' क' उमरक
 निरुपम बलि
 किन्तु आशा के जोगौने
 जिवित रहन
 सेहो एकटा पेश धोखा छैक
 जीवनक अर्थ
 आइ समग्र रूप चुकि गेल छैक
 यथार्थ के
 ओकर सम्पूर्ण अर्थहीनताक संग
 ग्रहण करव
 हमर विवशता अछि
 सामर्थ्य मे निहित
 मात्र यहटा सत्य अछि

वीर-मालिक

अस्ताचल मामी सूर्य के घणाम

एक जड़ता —
 जे मन प्राण आ चेतनपर
 पसरल जा रहल अछि निरन्तर
 महाशून्यक विस्तार
 निधुनन अन्धकार
 नहि कोनो ओर-छोर पारावार
 काल समुद्रक महावक्ष पर टिमटिमाइत
 एकटा अग्निपिण्ड
 उत्ताल तरंगक बीच संघर्षरत
 एकटा वीर योद्धामत्स
 भूषण मारैत अनेकानेक बोझार
 मधुमाछी जकां लुधकल-टेंगरा पोठी इचन
 तैयो,
 तैयो विजयोद्धासक स्मित हास अछि पसरल
 धानक लावा जकां जल-तरंग पर, सैकत शैथ्या पर,
 इजोरियाक चटाइ पर !
 एकटा मोनक बितान —
 शांत निस्तब्ध राति
 सुगन्धक वणन बटैत घर-घर
 अलसायल बसात आ
 कोनो घर स बहराईत चित्कारक मधुमेदी स्वर
 स्त्रीक आर्तनाद
 गोलीक आवाज' बम-चिस्कोट
 थाना पुलिस कचहरीक तमाशा

खेल खतम

व्यवस्था द्वारा अभियुक्तक तलाशीक आश्वासन
तैयो,

तैयो लोक अछि सूतल निसमेर बा गबदी मारने
कोनो गांडीवधारीक प्रतीक्षा मे

कोनो भगत सिंह

कोनो आजादक प्रतीक्षा से !

एकता महायज्ञक बिनापन —

देशपर युद्धक सम्भावना

आकाश मे मड़राइत झुण्डक झुण्ड गिद्ध

आणविक शक्ति परीक्षणक समारोह

रुह युद्धक आगि मे पजरैत सम्पूर्ण देश

पाखंडी नेता लोकनिक हाथ मे गुमराह

दिग्भ्रमित युवा-शक्ति

सम्पूर्ण आन्दोलन के समाप्त करबाक उपक्रम

प्रतिक्रियावादीक ताम-भ्राम

चमचा-सम्मेलन, पराजित-पराभूत

जयचन्दक राजनीतिक षड़यन्त्र, अन्हरजाली

महारथी महायोद्धा मन्त्र विद्ध

तैयो,

तैयो होमक धुंवा से लोक नहि भ सकल

अछि आन्हर

ग्राम एखनो पजरि रहल अछि

कस्बा एखनो सुनगि रहल अछि

शहर एखनो लहकि रहल अछि

— १०१ —

[आजुक कविता]

समानधर्माक नाम

हे इमर समानधर्मा ! समाप्तप्राय अछि

सैंतीस वर्षक कारी-स्याह राति कुहेस

फाटि गेल अछि भिनसुरका लाल प्रकाश मे ई भ गेल अछि स्वध

जे राजनीतिज्ञ अछि पाखंडी, चोर

की राजनीति, जनतंत्र, समाजवाद आओर व्याथक पाखंड

नहि टिकि सकैछ आब आओर दुर्दान्त अछि मनुक्खलक यातना

‘टाइगर ब्रान्ड’ खोल भ’ चुकल अछि उधार

अपन स्थिति-बोध सँ अपस्वांत

भाषण पर भाषण द’ रहल सियार नहि भ’ सकैछ सफल

आब आओर बेसी दिन

आयातित दर्शन किंवा प्राचीन परम्पराक वैशिष्ट्य पूर्वज द्वारा

कौनल गेल उधार

हाथी, घोड़ा आओर कित्ताक कित्ता खेत-सामन्तवादी अवशेषक

आब नहि रहि गेल अछि कोनो अर्थ—नग्न वथार्थक समझ ।

शोषक अछि थोड़

आओर बहुसंख्यक जनता भ’ गेल अछि आश्वासन

आओर भावुकताक शिकार जाबी लागल बरद जर्का

फाटि रहल लकर सरकारी टिकारी पर मेहक चारु कात

आओर एइ सभ समस्याक मूल्मे अछि गरीबी

भुदा नहि छैक तकर ककरो परबाहि राजनीतिज्ञ केँ त’ कनियो नहि

स्वार्थ सिद्धिक अतिरिक्त

नेता अफसर पुलिस आओर जनता—सभके सभ अछि लागल

भरबा मे अपन खाधि । दुमहला केँ चौमहला बनयबा मे

नहि छैक ककरो गरीबी हटयबाक चिन्ता तत्काल

दोहाइ यथास्थितिवाद ! नहि छैक

ककरो पास कोनो उद्देश्य सम्प्रति जखन कि ई अछि सर्वविदित—

सम्प्रेष्य

[आजुक कविता]

जे छोट पूँजी के बनायल जा रहल छै क देश मे पैघ

सर्वहाराक काटल जा रहल छै क घेंट दिने-देखार

आओर एहि अनेतिक पूँजी-विस्तारक व्यापार मे शामिल अछि

मंत्री आओर पुलिस आओर सम्पूर्ण शासन-तंत्र

आइ लोक व्यक्ति सँ वोट बनि के रहि गेल अछि

कि नहि रहि गेल छै क

सर्वसाधारणक पास कौनो अधिकार संविधान बनल अछि 'फास'

कि नहि रहलैक आव आत्मा नामक वस्तु ककरो पास

राष्ट्रीयकरणके एहि युग मे

अर्थहीनता आओर कायरता आओर भावुकता

बनि गेल छै क लोकक आचरण मिथ्याडम्बर

भ' गेल छै क आदर्श आओर अवसरवाद आध्यात्मिकताक पर्याय

अनिश्चय आओर असुरक्षाक कैसर सँ रुन सम्पूर्ण देश

क' रहल अछि यात्रा हिमालय सँ कन्याकुमारी धरि

रोटी सँ जनक्रान्ति धरि

गाम सँ पार्लियामेंट धरि

कविता सँ एटम धरि.....आओर अपन अरन

लाश के उधने चल जा रहल अछि लोक

क्रान्तिक नारा लगबैत अन्यायक विरुद्ध

सरकारक विरुद्ध

वर्तमान व्यवस्था आओर बुजुआ जीवन पद्धतिक विरुद्ध

प्राचीक छाल किरिन मे—

बढ़ि रहल अछि असंख्य-असंख्य तर-मुण्ड मुट्ठी तनने कि आव

बन्द करवाक अछि जय-जयकार साहित्य लेखन

संघास करवाक अछि प्रवचनाक नाटक सम्वादक परिपाटी

कि करवाक अछि जनताक मोह-भंग—हे हमर कर्ण.....हे हमर समानकर्मी

—:०:—

सदय चन्द्र भा "विनोद"

मैडमक नाम एकटा अपील

आइ

एक बेर फेर आयल छी

दिल्लीक दरबार मे मैडम

ओहि बेर असगरे आयल छलाह

बिद्यापति ठाकुर

एहि बेर बहुत रास

बहुत रास अनने छी हीरा-जवाहरात

सीताराम कहु मैडम

हमर कोन गतात

हमरा ठामक लोक तऽ एखनो

बुताते लेल बितल जाइ छै

रौद मे सुखाइक बदला

तितल जाइ छै ।

हम बाध्य भऽ कऽ आयल छी मैडम

ओहि बेर राजाक सवाल रहै

एहि बेर प्रजाक सवाल छै

अही विचार करू

हमरा की भेटल

भाट के पपनी सँ बहारैत

बर्षक वर्ष बीतल

करेज सँ तिरंगा सटौने

कुहरि रहल छी
अहाँक एहि राज मे
तेना जिवैत छी
जेना मरि रहल छी

अहाँक प्रत्येक सिपहसालार
भूठ बजैत छथि मैडम
अहाँ जुनि बाजब
शांतिक दादी माँ
अहाँ नहि भूठ बाजब
जाहि घरक मुखिया फुलियाह होइछ
से घर निश्चयतः खकसियाह होइछ
के नहि जनैत अछि अहाँ केँ
हे राजीबक माय
दर्दक लय पर चलैत जीवनक
नहि लीबइ प्रतिपाय ।

हमरा लोकनि सिनेही लोक छी मैडम
सिनेहे जिवैत छी
सिनेहे बरतैत छी
चान उपजावे छी
ताराक खेती करै छी
हमरा खाली हाथ जुनि घुराउ
अन्यथा रहि जायब
दिवस रानीक नाकसक नूआ
अकौँ धराउ
हम अपन भाषा मंगैत छी

कोनो चान नहि
अपन स्थान चाहैत छी
कोनो सम्मान नहि ।

बिनती सं बन्दूक धरिक यात्रा पर
जुनि करु बाध्य मैडम
हमर जनकक देश थिक
जतऽ एखनो प्रत्येक वालाक
मोन-प्राण मे बास करैत छथि जानकी
एखनहु जतऽ युवक मे भेटताह महेश
हमर थिक मंझन मिश्रक देश
सुनने हेबै अहूँ काता आ खंडा
अनेरे ठाढ़ केने छी बितंडा
भंड सकैए नहियो सुनने होइ
कोन बेगारता अछि
बातक बात सं फुरसति होयत
तखन ने काजक बात सुनवै
ओना अहाँ जे अपना कान सँ
नहि सुनैत छिये
सत्ते बड़ जुलूम करै छिये ।

हमर एहि बिनती
एहि संधि प्रस्ताव केँ
नहि ठोकराउ मैडम
हमर एहि सौम्य रूपक
प्रखरता नहि अनठाउ
हमरा देह परक गुदड़ी

आ ठोर परक गीत
क्यो नहि छीनि सकैत अछि
अहाँ सँ पहिनो
आर बहुत लोक प्रतापी भेल अछि ।

—:०:—

डाइन

जहिया कहियो ककरो
गाम मे लोखी भेल
बुढ़ियाक माथ बनकि जाइ छलै
नैना ककरो दुखित पड़े छलै
पराभव ओकरा भऽ जाइ छलै
एकेटा रंगमे भरि गाम
भऽ जाइत छलै कुंदाबोर
रोगक कारण थीक बुढ़िया
सब उपाधिक कारण थीक ई डाइन ।
घाट केँ सध्यास्ता पत्नी जकाँ
आ कि मन्दिरक सीढ़ी जकाँ देखैत लोक
प्रत्येक दिबड़ा भीड़ केँ ब्रह्मक पीड़ी
भूमि पुजैत लोक
पीकरक घात जकाँ हरहराहत
आ केराक भालरि जकाँ कँपैत लोक
लोक केँ अनठा कऽ जियैत लोक
अनका केहुनियां कऽ आगा बढ़ैत लोक
सगर गाम बुढ़िया से डेराहत रहल
एहि गामक आदि शक्ति थीक ई बुढ़िया ।
ई बुढ़िया गाल हंकेए

ई बुढ़िया काज करए
हाथ पर हाथ भऽ कऽ जियैत
विपति भोगी एहि गामक लोक
औखद बिनु मरैत गेल
मंत्र पर चढ़ैत गेल
एहिना राइ केँ पर्वत
आ पर्वत केँ राइ करैत रहत
आइ ओकरा डाइन
काखि ओकरा चुड़ैल कहैत रहत
एहि गामक धनीक सभक मादे
जिन्नक खिस्ता पसरल छैक
सब बड़की पोखरि केँ खुनौने अछि दैत्य
मनुखक असमाहि शक्ति केँ
अनठबैत लोक
डाइनक बल पर
जीवनकेँ सपठियबैत लोक ।
नहि जानि कहिया धरि
एहि गामक रहत ई हाल
नहि जानि कहिया धरि
विवेक बाबू रहता कंगाल
हे फेर ककरो लोखी उरलैए
फेर लोक बुढ़ियाक
फट्टक ठकठकौते
अज्ञानक उबरा मे
माउग-पुरुष बोडिअएत ।

—:०:—

हाल समाचार

वेदिक नदी आ परीकथाक पहाड़ी सभसँ वेदल
प तीस वर्षक विषम दूरी मे पसरल गाम हमर
कुमारि सपना सं अधिक रहस्यपूर्ण आ
बंगोपसागरक लहरि सं अधिक लयपूर्ण
वस्तु आ स्थितिक समिश्रण सं गुजरि रहल अछि आ
व्यक्ति आ स्थितिक बीच तालमेल स्थापित करैत-करैत
हम किर्तव्यविमूढ़ भेल
आत्मीय कह' जोगर संबोधन केँ भिड़िया रहल छी ।

सभ किछु त ठीकेबाक छैः
गामक विपुल आवादी मे
कोनो ने कोनो घर मे प्रत्येक राति भोज होइते छै आ
हमरा सन कदन्त भोजी केँ पकवानक सुगंध लगिते छै ...
स्तोत्ररत्नावली या मालिकक दरबजा मे
अन्योन्याश्रय सम्बन्ध स्थापित कएल जाइत छैक, आ
दूह-कोहि के अथवलक विरुद्ध संघर्षरत कएल जाइत छै,
गामक मुखिया लोक केँ छातार निर्मम होएबाक
उपदेश देत-देत थकैत नहि अछि ...

जड़काछा मे बोरसि मे पकाओल जाइए अतीत आ
भविष्य नकली दांत पिसैत
प्लास्टिकक हाथ नचबैत निर्भयताक संगीत केँ बरजैत रहैए, एकर
हमरा लोकनि अवना रचनात्मक मूल्य केँ
बैसी सं बैसी दामपर बेचबाक लालसा मे

प्रतिदिन निलज्जताक सीमाधरि
न्यायारी संघ सं अपील करैत छी । ई कोनो
अनट बात भैवो नहि कएल
युग सौदेबाजीक धिकै - से
रचनात्मक मूल्यक हो, चाहे इमानक आ
हमर गाम आ गामक लोक एखन
सौदेबाजी मे मगन अछि ।

सत्ते, गाम मे अखन त'
सभ कीछु ठीकेबाक छै ।



हमर एकटा गाम रहए

हमर एकटा गाम रहए
गामक कछेर मे बहैत रहै एकटा सदानीरा
जल बड़े शीतल आ सुखादु रहै । मुदा, आब ओ
सदानीरा सुखा गेल छै
छहोछित्त भ' दारि फाटि गेल छै । ओ
हमर माय छल ।

हमर एकटा गाम रहए
गाम केँ छाड़ने रहै बड़कीटा बरक गाछ
ओकर छाहरि मे कतेको ने जेठक दुपहरिया बितौने रही
आब ओ गाछ टुट्ट भ' गेल छै
कौआ नहि कुचरै छै
कोइली नहि कुहकै छै । ओ
हमर बाप रहथि ।

हमर एकटा गाम रहय

गाम के चारुभर सं बेहने हरियर कनोर बाध-बोन पर

नचेत रहे बटगमनी मलार बरहमासा । मुदा,

आब ओ परपट्ट भ' गेल छै

ओहिठाम धूरा उड़िआइत छै । ओ

हमर भाय-बहिन रहय ।

हमर एकटा गाम रहय

गामक एक कात मे लगौने रही एकटा फुलवाड़ी

एक कोन मे रोपने रही

रजनी गंधाक एकटा भाइ

ओकर गन्ध मे कतेको दिन धरि

मातल रही । मदहोश रही । मुदा, आब ओ

रजनीगंधा मौला गेल छै । ओकरा सं

सुगंधित बसात नहि निःसृत होइ छै । ओ

हमर पत्नी रहथि ।

एकटा सुलायल सदानीरा : माय

एकटा टुट्ट बरक गाछ : पिता

परपट्ट भेल बाध—बोन : भाय-बहिन

एकटा मौलायल रजनीगंधा : पत्नी

पारा शोखरल अयना मे नचेत

मत्तस्टि अपरिचित प्रतिबिम्ब मे परिचित

एकटा हम । आ,

हमर तरबातर भरती

तरहथी पर अटकल आकाश

छाती पर दौड़ैत द्रुम

— 1 —

महाप्रकाश

जाबीक विरोध मे

ओ आदमी जे कलम सँ दिशा केँ

अनुप्राणित करैत छल

ओकर पत्नीक बलात्कार भ' गेलैक

ओ आदमी जे आंकड़ा आ हिसाबक फरेबी चालिकेँ

परखि लेत छल । ओ सड़कक कातमे लवारिस

लहास भ' गेलैक । ओ युवा जे कविताक दुनियाँ सँ

निकलि । अपन सपनाक संसार हेरैत छल

सर्द-शहीद भ' गेल । ओ आदमी जे अपनेक

दहिना-बामा हाथ । कवच कुण्डल शिरत्राण छल

बागी गुरु द्रोण के हेरि रहल अछि ।

एहि महान देशक संविधान पर

कुण्डली मारि । जखन सँ बैसल अछि

प्राइमरी स्कूलक मास्टर । समग्र

जनकल्याणी धारा-उपधारा गोल गंध

गंगाजल बनि गेल अछि

एहि प्रचंड वैतरणी मे । माय धरिक ओखि

सरकारी आश्वासन जकाँ बाँक बीरान बनल अछि

एहि बाँक बीरान मे के अछि पीड़ित

के अछि पीड़क । के अछि पीड़ाक साक्षी ?

इतिहासक अन्दार गली सँ ल' क' । वर्तमानक

इन्द्रधनुषी रोशनी मे हमर कवि लगातार

बतहा महादेव जकाँ बौआ रहल अछि

किन्तु हमर एहि शान्ति प्रिय
ऐतिहासिक न्याय व्यवस्था मे । कतहु
कोनो तरहक चर्चा अपेक्षित नहि होयत
कविक शब्दावली । लवारिश कूकुरक हेंज
चतुर्दिक भुकेत अछि । भुकेत किएक ?
अहाँ कहैत छी मुदा । मुदा अहाँ जानी
विश्वास भानी महामहिम । ओ आदि कविक कथा
कविता कामिनी । हजार बेर वल्लुकता होइतो
पद्म वराग पर विलसित सरस्वती अछि !

□

बयान

माननीय न्यायमूर्ति
हम जे कहब सत्य कहब
सत्य छोड़ि किछु नहि
मामला अछि जे हमर नाना
वक्त इलाही फैल के, हमर माय के
मशहूर ओ मारुफ सोनाक निडे
ई जागीर अता कएने छलाह
नचेत धारक कात मे सामवेद गवैत लोक जन
क्षमा करब न्यायमूर्ति
हम कने अवांतर चल गेलहुँ
मुद्दा अछि जे हमर माय आव बूढ़ि
जकर कथनी आ करनी मे
बरमहल एकटा पैघ दरारि

खज्जाहीन गरीबी जकां

हुल्की मारत छैक

.....हमरा शक अछि

ओ हमरा एहि जागीरक

वारिस नहि घोषित करत ।

हमर सभटा मसिबौत आ पिशियौत भास

जगह-जगह गोलबन्द भ' रहल अछि

वातावरण मे एकटा हौलनाक कनफुलकी—

पसरि रहल अछि

ई सभ क्यो चोर उचका अछि

गाम सं शहर धरि एकरा

देखल जा सकैत अछि ।

न्यायमूर्ति हमर पिता आ पिस्ती

एहि जागीरक प्रति न्याय आ प्रेम

नहि बरति सकलाह, सिर्फ सुविधाक गाय

हुँवैत रहलाह बांसुरी पर

बेसुर राग फुकैत रहलाह सिर्फ

हम अदालत सं दरखास्त करैत छी

ई जागीर । ई बेजुबान गाय हमरा

सिर्फ हमरा दिआ क' हमर

पुस्तैनी हक आ हक के बहाल

आ बरकरार राखल जाय

ओना कहनाक लेल बहुत किछु छल हमरा लग

ओना कहनाक लेल बहुत किछु छल हमरा लग
जेना,
जंगली फूल सँ टपकैत ओस
अहांक सती-देह
हमर थकुचल पौरुष
डीह-डिहवार मे नहु-नहु पसरैत सान्ध्य-राग
उतरैत रातिक चिन्ता मे
बड़क गाछ तर
सिपहा लगाओल बेलगाड़ीक पांति
पजेबाक चूल्हा सँ नमरैत धुंआ
ओना कहनाक लेल बहुत किछु छल हमरा लग ।

जेना,
हमरा सँ फराक हमर चेतना
मूटल-भाङल सपना जकां
हमर सभक खण्डित एकान्त
रौद मे हकमैत कुकुर
केरवी आभक गाछ पर भट्ठा फेकैत टिंक
बूथ दिस छपकैत जनतंत्री भौड़
वेस्तक किरायेदारक युद्ध विरोधी जलथा
एयमी छीपि मे अंकित शांति प्रस्ताव
ओना कहनाक लेल बहुत किछु छल हमरा लग ।

जेना,

अमिताक बेगरता तर निश्चेष्ट हमर कविता
प्रियजनक असुरक्षित सुसुप्त सनेस
फूलक टियसोसी गन्ध
पीठ लागल ककरो सिसकी
माछ आ लहरिक प्रेम
सांस आ सीनाक बन्धन
छुटैत शहरक चौबट्टी पर अहां सँ हमर हड़बड़ भेंट
ओना कहनाक लेल बहुत किछु छल हमरा लग ।

तनक पाप
मनक पाप
कतेको बरखक सहनासक आगां अपरिचितक खड़ा
कोड़ी पर नोर जकां भइरैत कलहुका कथा-व्यथा
प्रोखरिक पानि मे पैसैत घाट
ओ गीत
ओ गजल
आदिम वासनाक कांपैत स्वर मे गाओल
ओना कहनाक लेल बहुत किछु छल हमरा लग ।

बरखा सँ छद-बद मेल बंसबिड़ी
ओलती सँ चानीक ओछार
नाभि-लग गइत कांट
ककरो नाम छैत हम आ झुबैत कपोत
दिन भरिक कमाइ — उदासी
राति भरिक सेहन्ता पिआस
गाम सँ ताजमहलक दूरी
कब्रर मे जेना सँ पहिने तबआरि उठैबाक विवहाता

किछु करवा नहि करवा पर ओझड़ल निणय
 नहुत हाथपर शंकाक लाठी
 फांस मे दबलैत गरा-जोड़ी
 दहल घर
 भखरल चबुतरा
 ओना कद्वाक लेल बहुत किछु छल हमरा लग

अपना गामक नाम एकटा शोक गीत

बहुतो बुझनिहार लोक जकां
 स्वर्ग-नर्क मे हमरो कोनों विश्वास नहि अछि
 मुदा स्वर्गक नाम पर आस दैत सुख
 आ नर्कक नाम पर गुम-सुम दुःखक
 कल्पना जखन करैत छी
 हमरा बहुतो गाम जकां
 आपन गाम मन पड़ेछ

हमर गाम
 एकटा धारक किन्हेर मे
 कोनो भूमयार बबुरबन्ना-सन
 गारा जोड़ी कयने ठाढ़ भेल
 चालिस-पचास टीहनुमा घर सभक नाम थिक
 जत' जाड़ आ बरखा त'
 सभ साल अवैत छैक खटा द

मुदा ओहि बाहु भूमि-भांवि
 कमे काल जाइत अछि बसन्त
 हमर गाम
 शहर-ठाम थिक
 क्रमे-क्रमे निरन्त होइत माधव
 दिन-दिन उधार होइत राधा
 आ एहने किछु आर लोक सभक
 जकरा सभक हारल प्राण
 सपनो देखैत काल धिधिआइत छैक
 आ जिनगीक छोट पैघ सभ मोकास पर
 पहुँचवाक क्रम से रिरिआइत छैक
 शहर-ठाम थिक ओ
 किछु भांपलो लोक सभक
 जकरा गाम मे रहला सँ लौत छैक
 जे गाम मे लोक अखनो रहैत अछि
 हमर गाम
 एकटा एहन कुशल हाथक रचना थिक
 जकरा लग कौशल त रहैक नैसर्गिक
 मुदा सामग्रीक निरुद्धाहे अभाव रहैक
 घर सभक कोनटा लागल केराक थर
 किछु बांस-बबूर
 किछु गाम-लीची
 दू-चारि गाछ कटहर-महुक
 त' दस-बीस गाछ ताड़ो खजूक
 जत' तत' दस-बीस गाछक आमक गड्डुली
 देवी-देवताक पीड़ी-गह्वर सदा दू-चारि ठाम
 हँवनिष्क लगाओल दूटा सरकारी चापा कल

आ पोखरि भीड़ पर प्राइमरी स्कूलक खपड़क पर
 एकदम पुबारी कात भेटत
 डोमटोली सँ भिड़ले कच्ची सड़कक बामा कात
 धीर पती जकां ठाढ़ अकादास्त बटबुझ
 हमरा गामक खास आकर्षण थिक

हमरा गाम मे बहुतेरास वस्तु अहां के नहि भेटत
 अभाव बरोबरि एहि गाम के
 ल्यायी भाव रहलैक अछि
 हमरा गामक स्कूल मे राष्ट्र-ध्वज फहराओल जाइछ
 एहि स्कूलक बूथ मे लोक भोटो खसबैत अछि
 अपन एहि देश मे तीन युग सँ
 अपने सभक राज थिक
 तखन हमरा गाम सँ पटना धरि
 सड़क कहिया बनतै
 ककरो बुझल नहि छैक
 दिल्ली त' फराके सुनैत छिये
 जे बड़ी मानी दूर छैक
 प्राइमरी स्कूल जकाँ कोनो स्वास्थ्य केन्द्र
 एखनो धरि नहि भेल छैक एहि गाम मे
 एकटा पुलिस फाँड़ी
 नक्सर इम्हर जरूर स्थापित भेलैक अछि
 गामक दूटा बौदायल छौंड़ा
 पुलिसक नजरि मे नदल छैक
 सुनैत छी, इएह सभ
 खानगी मे कहैत धुरैत छैक
 जे हाथ पसारब सँ हाथ उठालैव

बरोबरि निगायक बात होइत अवलैक अछि
 सभठाम जकां अहू गाम मे
 सोचल त इएह गेल-रहैक
 सभक ठोरपर सुखक बंशी रहैक
 आ सभक भुज-बास मे
 लजाइत भेटतीह एकटा सत्यभामा
 एकटा सुमद्रा
 कि एकटा लखिमा ठकुराइन
 पोथी सभक पांती मे
 मात्र सुखक आखर अंकित रहैक
 कोनो सूर्य
 कि चन्द्रमा
 कि आकाश बांटल नहि जायत
 मुदा तेना क' वास्तव मे भेलैक नहि
 आ बीत-बीत मुट्ठी-मुट्ठी
 बुधियार सभक ढोल मे बंटा गेल
 सुख-शांति बखरा लागि गेल
 आ आत्मा तक बाँचल नहि दद
 आपकताक नाम पर
 कठियारी मे सङ्ग देव
 आब एकटा पैघ बात बुझल जाइत छैक
 सोचल त नहि गेल रहै
 मुदा दुःखक आखरे अधिकांश लोक पढ़लैक अछि
 सुखक आखर आंखि देखबा लेल
 सीता केँ गाम पर त्यागि
 परदेशक आकर्षण मे दौगैत
 कतोक राम केँ विवश भ' जाय पड़लनि अछि

बहुतों दिन सँ रामक हमहूँ अनुगामी छी
 हमरे जकां आइ क्यो फेर गाम सँ
 अपना मनै अपन सुखक लोज मे परायल अछि
 आइ फेर एकटा माय जोर सँ चिकरैत छैक
 फेर एकटा बाप माथ पर हाथ ध'
 सांके जे असोरा पर बैसत छैक
 सँ भोर भ' जाइ छैक एहि गाम मे
 अही गाम मे हमर माय
 लज सँ तीतल अपन मन मे
 आन्दोलित चित्त सँ
 कहियो कामना हमर कयने रह्य
 ठेहुनिया देबा सँ
 नगरक अनजिन्हार सड़क पर डाढ़ देना भरि
 हम अही गामक कण-कण मे
 अनुगुञ्जित जीवन-राग
 कान पार्थ सुनल अछि
 आ छक भरि गाबोल अछि
 हमर संभावनाक अभिन्नचित कथा
 हमर शैशवक अवोध कथा
 आ हमर यौवनक रसैत कथा
 अही गामक बेइश परल धरती मे अंकित अछि
 हमरा पितामहक श्राद्ध मे दागल गेल साढ़
 आ हमरा पितामहीक लारा
 अही गामक कुसियारक खेत मे
 आ धारक सटले कात मे
 अखनो मौजूद अछि
 काल्हि एहि हीत-मीत गाम मे

ज' अपन गामक अनुसूति सम्मित लागत
 कत' जाक' तरिहूँ तखन
 ताकन अपन गाम
 जत' हमर पुरखाक पौरुख अपित अछि
 आ केहनो संभावनाती मौसम मे
 हुनक संयमक अद्भुत मर्यादित वृत्तान्त
 जाहि गामक एहि सिमान सँ
 ओहि सिमान धरि अंकित अछि
 आत्मा सङ एना क' एक मेल
 पार्थिव सम्बन्ध सँ जोड़ल अपन गाम
 कर्ज वा उधार मे भेटत कत'
 अपने सँ हैत की संभव कहियो
 केर सँ एकर ओरिआओन कबल
 अपना गामक लेल ई शोक गीत
 हमरा मोनक कोनो अवशकुन नहि
 मात्र हमरा मनक
 एकान्त ममताक उद्देश्य शिक
 ओना हमरा गामक लेल
 किछु ने किछु सिनेह सँ सोचय
 निश्चिते बहुत जरूरी छैक

अजगुत देश

ई आकाशवाणी थिक
विचित्र सन्नाद पढ़ि रहल छी
आचार्य अनटोटल

हेमनिष् मे
भारतीय भू-सर्वेक्षण विभाग के
एकटा नव देशक पता लगाए
जे
तीन कात नदी
आ एक कात पहाड़ सँ घेरल अइ
नामकरण कएल गेलैए
अजगुत देश

ओना
किछु भू तात्विक लोकनिक मतें
ई देश नव नहि
बड़ पुरान थिक
इतिहास सँ पुरान जरि
जनक

याज्ञवल्क्य

गौतम

कपिल

कणाद ... क

जन्मस्थान

मिथिला

तिरहुति बा

विदेह भूमिक चर्च

एकर ज्वलंत प्रमाण थिक

मुदा

भू-सर्वेक्षण विभाग

एकरा नहि मानैछ

ओकर कहब छैक जे

पुराण कथित

मिथिला देश मे

जनमल छलाइ

शिव सिंह

अपन

भू-भाषा-संस्कृतिक रक्षार्थ

कएने छलाइ संघर्ष—आजीवन

एक नहि

सतरह खेप

भेल छल पराजित

दिल्ली सुल्तान

तेहने होइत अछि

मिथिलाक सन्तान

परजव

एहि अजगुत देशक

मानुसक आकृति आ

पशुक प्रवृत्ति बला जीव

ने त माउग अछि

ने पुरुष

ते ई देश

आर जे कोनो देश किएक ने हो

मिथिला देश नहि भ सकैछ

किन्नहुँ नहि भ सकैछ
 ओकर कहब छैक जे
 पुराण कथित
 मिथिला देश मे
 जनमल छलाह
 कविपति विद्यापति
 घोषित कएने छलाह
 बालचन्द्र विज्जावह भाषा
 गओने छलाह
 परम प्रिय
 पावन
 तिरहुत देश
 परञ्च
 आशुक
 पञ्चरिखाक तेसर सन
 हाँजी-हाँजी करैत
 नाचि-नाचि
 जनगन-मन गवैत
 कविनामधारी अस्तुक ई देश
 आर जे कोनो देश किएक ने हो
 मिथिला देश नहि भ सकैछ
 किन्नहुँ नहि भ सकैछ
 ओकर कहब छैक जे
 पुराण कथित
 मिथिला देश मे
 जनमल छलाह

जगजननी जानकी
 भरती पुत्री
 सीता
 बनिका
 अपमानित कए
 कओने छल
 अपन
 नाक
 कान
 लंकापति रावणक बहिन
 सुपनेखा
 परञ्च
 आशुक
 सुपनेखाक तरना चटैत
 माँ मैथिली केँ
 नाक
 कान
 काटि
 घर सँ
 बला देनिहार
 सन्तानक ई देश
 आर जे कोनो देश किएक ने हो
 मिथिला देश नहि भ सकैछ
 किन्नहुँ नहि भ सकैछ
 ओना
 अनुसन्धान चलि रहल छह

देश-विदेश सँ

भू-तार्त्विक

नृतात्विक

सभ आबि रहल छथि

वात

आगू बढ़ि रहल छइ

तँ

विचित्र सम्बाद

आजुक लेल

एही ठाम

शेष भेल

□

एहि संपत्तीस बख मे

आ

ओकर पछर थकमका जाइ छइ

शायक हुनहुनाइत घंटी

चुप भ जाइ छइ

कातक

कोनो दोकान सँ अबैत

रेडियोक आवाज

राष्ट्रपतिक भाषण

राष्ट्रक नाम

अगतिक लेखा-जोखा

आजादीक

संपत्तीसम बखगाँठ पर

'संपत्तीस बखे !'

ओ निसास छोड़ै

आइ सँ

ठीक संपत्तीस बखे पहिने

ओ कलकत्ता आयल छल

ओहिना मन छइ

सिनेमाक रील अहाँ

समस्त घटना

जेना आखिक सोझा

नचेत होइ

एक दिन

निसाभाग राति मे

जखन कि सगरो गाम नितबद्ध छलै

हुम-हुम करैत

जुमि गेल छलै

गोर चालिसेक पुलिस

घेरि लेलकै

चारुकात सँ ओकर घर

घरक फट्टक तोड़ि देलकै

आ

ओकर बाप के

पकड़ि क ल गेलै

ओना ई गप्प

ओकरा बाद मे पता लगलै

जे ओकर बाप

सोराजी दल मे छलै

आ ओकरे गामक जमींदार

सतल्लरेन बाबू

ओकरा पकरवओने छलै

जे

पुलिसक बंगदि छलै

से त

ओ अपने आंखि

देखने छलै

तकर

मास छ-एक बाद

एक दिन ओ सुनलक

'देश अजाद भ गेलै

सोराजी दल जीति गेलै'

आ

तइया ओकरो मन

खुसी सं नाचि उठल छलै

लोक सभ कहै जे

आन ओकरो बाप के

जहल सं छोड़ि दैतै

ओहो

बुरि गाम छै

सुदा

दिन पर दिन

मास पर मास

बीति गेलै

ओकर बाप

बुरि क नहि छलै

ओ

सतल्लरेन बाबू

ताही बेर

डिहली गेलै

लोक सभ कहै

मिनिस्टर बन गेलै

आ

ताही साल

अगहनी मे

ओकर माम

गाम गेल छलै

धुरती काल अपने संग

एकरो कलकत्ता लेने छलै

'सरो,

ई रिक्सा स्टैण्ड बना लेलन ...'

आ

तराक द ओकरा छावा पर

डंडा पड़ैत छलै

ओ छिलमिला जाइए

टाक पर नजरि पड़ैत छलै

कत्तेक पातर भ गेलैए

एहि संवत्तीस बर्ष मे —

एहि संवत्तीस बर्ष मे — ओकर हाड़ कत्तेक

जगजियार भेलैए

एहि संवत्तीस बर्ष मे —

एहि संवत्तीस बर्ष मे — ओकर डांड कत्तेक भुकलैए

एहि संवत्तीस बर्ष मे —

एहि सँवतीस बरस मे पुलिसक छाठी कत्ते क
सबधानल भेलेए

एहि सँवतीस बरस मे—

एहि सँवतीस बरस मे —ओकर गारि कत्ते क बिनाओन भेलेए

एहि सँवतीस बरस मे—

आ

ओकर पएर

अपनहि बढि जाइ छइ

बंटी—

दुनदुनाय लगै छइ

‘बन्ने कहाँ ?

इधर चळै

आ

पुलिसक धक्का सँ

ओ खसैत-खसैत बंचेए

साबने धाना छइ

अहिया

ओ कलकत्ता आयल छल

ई धाना नहि छल

ओ अपन गामक

असगरे छल

इखन

गोर चालीसेक हेतै

केओ ठेला ठेले छइ

केओ रिबसा टने छइ

केओ भाका उधै छइ

एहि बेर

ओ गाम गेल छल

सगरो दुसधटोली भइ पड़े छलै

एकोगो पुरुख-धातक पता नहि

जेना ओह बेर भेल छलै

बखन कि

ओकरा बाप केँ

पकड़ि क ल गेल छलै

सगरो दुसधटोली

पड़ाइ लागि गेल छलै

ओना

एहि बेर लोक

डरै गाम छोड़ि

पड़ाएल नहि छलै

पेटक खातिर

पड़ाएल छलै

डिल्ली

पंजाब

ओ सोचैए

एहि सँवतीस बरस मे

कत्तेक टोल

कत्ते क गाम

खाली भेल हैत

एहि सँवतीस बरस मे

एहि सँवतीस बरस मे कत्ते क जुमान-जहान

अपन लोक-बेद

गाम-धर

तेजने हैत

एहि सँवतीस बरस मे

एहि संझतीस बरख मे रोटी कत्ते क सहग भेलैए
 एहि संझतीस बरख मे
 एहि संझतीस बरख मे मजूरी कत्ते क सहग भेलैए
 एहि संझतीस बरख मे
 एहि संझतीस बरख मे थानाक संख्या कत्ते क बढलैए
 एहि संझतीस बरख मे ...
 'साछा निकाल पांच ठो रुपैया'
 'पांचगो कहाँ स आयगा हुजूर
 आइ भोर स त

दुइएगो कमाया हाथ ...

हमरा लाहसेन्तो हाथ ...

'लाहसेन्स का बच्चा ...'

आ

एगो नबदस्त थापर

ओकरा कनपट्टी मे लगे छइ

ओ चकभाउर इ

खसि पड़ेए

आंखिक आगू

अन्हार भ जाइ छइ

ओकर हांड मे खोंखल नटुआ

पुलिसक हाथ मे झुलै छइ

ओकर पत्तेनाक कमाइ

दू गो टाका

पुलिसक हाथ मे उड़िआइ छइ

पुलिस बिहुं सेए

कालक

कौनो दोकान स

रेडियोक आवाज अगै छइ

राष्ट्रपतिक भाषण

राष्ट्रक नाम

प्रगतिक लेखा जोखा

आजादीक

संझतीसस वर्षगांठ पर

रिक्सा वाला

एखनो बेहोश पड़ल ...

ओकरा चारुकात

अन्हार छइ

गुज अन्हार

(स्व-निर्मित आतंकवाद अ, अलगवावाद के समाप्त करवाक लेल सत्ता पंजाब
मे सेना के सेनात क क युद्ध घोषणा क देलक। एही बहाने समस्त देश मे
कार्यरत जनवादी कार्यकर्ताक शिरपतारीक योजनाआ मंजूरा बन' लगले)

कुणाल

युद्ध प्रसंग (१)

पददलित लोकक देश
द्रुममलित भेल आइ
धर्मोन्माद बढ़बैत
अफवाहक रंगीन दुनियां बनबैत
आरंभ भ गेल
सहान प्रडयंत्रक विराट प्रदर्शन
अनशानक इच्छा व्यक्त केलकए

आइ अहल भोरे/आर एक बेर
हथकड़ी भनभनाएल हेलै
कोनो मुक्तिकामी बन्हाएल हेलै
आइ अहल भोरे/आर एक बेर
सुगन्धि औनाएल हेलै
सिनेह मुरझाएल हेलै/आर एक बेर
सौन्दर्य मौलाएल हेलै
सत्यक गरदनि दवाएल हेलै

आइ अहल भोरे/आर एक बेर
फेर कनेक जोरे/आर एक बेर
मुक्तिक सप्पत दोहराएल गेल हेलै
शहीदक रक्त फेर खलबलाएल हेलै
फेर कनेक जोरे/आर एक बेर

सभ डाढ़ होइत/आर एक बेर
दानव नृशंस
ने भागत ने बाँचि सकत
से दिन तेहन दूर नजि/से दिन ततेक दूर नजि

से दिन तेहन दूर नजि
भमजीवीक उदय हेलै
परजीवीक अस्त हेलै
से दिन ततेक दूर नजि/सभ उठि डाढ़ होयत
बोनिहार आ रेजा
टकराएत निर्णायक लड़ाइ मे
बंदूकी सभ्यता आ बारूदी व्यवस्था स
शोषणक कानून आ आतंकक संविधान स।

से दिन तेहन दूर नजि
इष्ट त हेबाक छह
प्राप्य अपन लेबाक
हाथ उठा देबाक
आक्रमणक मुद्रा मे

युद्ध प्रसंग (२)

माउग कानि रहलए
आ संसार पूर्वतल बाढ़ अइ
माउग कानि रहलए
आ लोक बाट पर गुड़कैत आढ़ अइ
माउग कानि रहलए
आ देवाल सभ-स अहंताक विस्फोट होइए

धूँ आक स्तूप उठेण

एमहर स

ओमहर स

सभठाम स

हलदिहली, हड़बड़ी

अनघोल, आसमर्द

अजीब सन हड़कम्प मे

एकटा गनगनी उत्पन्न करेत

माउग कानि रहलए

थम्हनाइ बिसरैत सन पड़ाइत रहनाइ

नोरक कोनो मूल्य नहि भेनाइ

सार्वभौमिकता छइ

कानूनक सरहद सीमा मे छइ

धूँ आ स समपृक्त अन्हार छइ

अन्हारक गहवर मे

चकराविन्नी करैत आवाज मे

माउग कानि रहलए

अभरतिथा मे

बाट पर फौज गस्त डे छइ

गिद्धक जुलूस हवा के चीरैत बल्लेइ

डकैतक जिला मे

लोक आँखि भुकोने ससरैत जाइए

बल्दी सति रहैए

चुप-चाप उठ' लगैए

जंगल उगेए एक-एक प्राण मे

आ

माउग कानि रहलए । कानि रहलए । कानि रहलए ।

— :o:—

अग्नि पुष्प

इजोतक लेल

अन्हार गुञ्ज गाम दिख

आस्ते-आस्ते

बढ़ल आवि रहल अछि

कोनो हमर संगी

इजोतक लेल

छतरल जाइत हो जेना

कजरी छाराछ देवाल पर

कोनो मुक्तिकामी अपराजिता

फूलक लत्ती ।

गाम 'जत' अनघोल होइ

जत' रीलीकक रोटी

कासीक फना सन बुझाएल होइ

सामंत, मुखिया आ पुलिसक

एकटा छुट्टा गोल होइ

गाम अनघोल होइ

अन्हार घरक डिवियाक

मसरी लागल बत्ती के

कने आर उसका देखैए

हमर संगी — इजोतक लेल

हमर घरक इजोत पनरि गेलैए

सीले गाम मे ।

गाम जत' युवक के
 पकड़ि लेलकैए कोतवाल
 देवाल पर नारा लिखवाक अपराध मे
 आ अपराधी बेसल हो
 पुलिस-कैमक देखभाल मे
 गाम जत' आब सिंगरहारक
 फूल नजि भड़ेत होइ
 सब टोल बबूरवोनी बुझाईत होइ
 कतौ बाढ़ि होइ
 कतौ दरारि होइ ।
 बाबूसाहेबक डरे आब
 लोक गाम छोड़ि नजि पड़ाइए
 अन्हारो मे एक-दोसराक
 बांदि पकड़ि आगू बदि जाइए
 एक गाम स दोसर गाम धरि
 बदि जाइए हमर संगी
 इजोतक लेल
 हमर संगी जे हमर बिचार भइ
 हमर संघर्ष भइ
 अन्हार गुञ्ज गाम दिस ।

भोर

बाजल कौआ - भेल सिनुरिया भोर
 सिंगरहारक सुगंधि स मांतल कन कन ओस
 गाम जागल
 भजूर-किसान जागल
 भागल अन्हरिया आ कुहेस
 किआ जकां ठाढ़ छैक पुलिस
 गामक चार ओर ।
 उड़ल चिड़इ चोंच भरि दाना लेल
 खेतहि मे सुखाएल कुसियार दिस
 आंखि मे फाटल धरती
 भूखे कनेत बच्चाक नोर ।
 कोठी भरल
 उमरल छल दलान
 मालिकक आंगन मे
 आइ नाचत
 मोलहो कला सँ इन्द्रधनुषी मोर
 केहन ई भोर
 गृहणी जकां कतबो ओ
 उड़य आकाश
 हमरे सकत हाथ मे छै अनन्त डोर
 उमड़ल बलान सन
 बढ़ल जा रहलए लोक
 अही माटि पर खसल छल
 धाम हमर इनहोर ।
 अपन साम्राज्य बढ़ेबाक
 बादकात छै होइ
 हमरे सोणित सँ सुगा सन छै
 लगी आ अमरीकी शासकक ठोर
 हमरे गाम सन छै एल-सात्वाडोर

विभूति आनन्द

मोह

अहां एना भऽकऽ ठण्डा होयव
से नहि जनैत रही
दरकल रही अपन दुर्भाग्य पर

जे अधर-युगल
दाड़िम जकों भलकैत
दराड़ि जकों फाटल छल
भीतरसँ प्योन जकों साटल छल
अहाँ एना भऽकऽ भाङल होयव
से नहि जनैत रही

अहाँ केँ कोन मोने बजाबी मीता ?
जकरा हम दिव्यांशु बुझने रही
ओ हिम-खण्ड निकलल
जे गीत
पराती बुझि डोर पर अनने रही
समदाउन आ उदासी भऽकऽ बहरायल

अहाँ भालरि जकों डोलव —
हम नहि सोचने रही

हे ! भोर आ साँझक धूनि मे

सेहो होइत छे फरक

अहांकेँ कोन धूनि क नामे सम्बोधित करी ?

जीवंत कहैत जीह कुचाइए

मृत कहैत कचोट होइए

जाउ, अहां तँ कट्टिस

अहांक सम्बोधनक तें नहि कोनो दरकार

कारण,

जे राइरि जकों जीबैत हो

जकरा भुलायल बन्वादानीक दर्द नहि जानल हो

जे सुखायल स्तनक कारण नहि तकने हो

आ स्वन्दन हीन होइ जकर मोन-प्राण

जाउ, तकरा सँ हमर कट्टिस

ई सहज विरोध थिक हमर अहांक नामे

भल करैत छी, जे

डाला जकां सांठल रहैत छी

पान जकां पाचल रहैत छी

हमर तँ माटि-माङ्गर आ

भरबड्ठी धरि भऽ चुकल अछि

आ नौता चुकल अछि हांसू

जाहिसँ निरीह छागर नहि

अताइ नर-भक्षीक संहार हेतै

अहां दम्मा जकां फुलैत रहू

मकड़ा जकां भुलैत रहू

हम अपन ऐ बिचार-दलक संग

प्रस्थान कऽ रहल छी

हमरा विश्वास अछि
जे पाछा ऐ गंधक संग अहां दौगब
ओहि नेना जकां
जे मोटरक जड़ैत तेलक गंध के
सुघे लेल दौगैत अछि पाछू-पाछू
हम तखनो स्वीकारि लेब
भोरक भुतियायलक स्वागत अछि

ओना अहां एते ठंढा होएब
से नहि गुनने रही
हम तँ अपन मोनक संसार बुनने रही
हे हमर मोनक बाटक कोट

तैयो हम अपेक्षा करब जे
अहां हमर मोनक चङ्गेरा में
अंकुरी जकां आयब
यंत्रणाक खापरि मे पड़ल
लावा जकां फुटब अहां
मुदा
गाय जकां नहि रहब

—:०:—

ओ परदेशी

परदेशी पहुना के देखि
ओकर आँखि मे
सहसा किछु फुला उठले
गोड़क चंचलता
कलेजा मे समा गेले
आ आँखि बाटे बतिआय लगावे
परदेशी पहुना के देखि
ओकर आँखि मे
कोनो अपरिचित मरदबा
डाढ़ भए गेले
आ कोनो बहिनाक ठेसगर मजाक
कतौ बेधि देलके
आ ओ कलेजा भरि हँस लागल
आँखि मे थोड़े लाज, थोड़े आकुलता
आ एक लख डर सऽ
ओ कतौ थकमका गेलि
परदेशी पहुना के देखि
ओ तखनिये
लाल भऽ उठलि—दुइदुइ
मने भकराड़ अड़हुल, वा
आम सिनुरिया, वा
हमहरस सेब
कइलके कोनो बहिना तखनिये जेना....
तेहन ने मिलले बुझुक मलीवा

कि उदास लडक 'गाछ'
फले-फुले लडि गेल

परदेशी पहुना मे देखि
ओकरा निम्नन लागऽ लगलै—
उगल चनरमा/भुमैत-गावैत मोन
मौगी-मोनसाक गप्प/सेनुर-देकुली
आ

देहक भीतर उठैत गुदगुदी मे
बुझाय लगलै दुनियां बहान
बसात जकित गतिमान ओकर मोन
पुनः तखनिमें सुनलकै—'चेहों-चेहों'
आ देखलक लड़िभोरी बनल अपना के
चारु बगल मेल थहाथही
परिजन-पुरजन के—
कि लजि कठौत भऽ उठल

परदेशी पहुना के देखि
थकसायलि ओ सहसा
भखरल कलम बाग भऽ गेलि
खुट्टी टूटल खराम भऽ गेलि
.....

हर पाँच दस बरिस पर 'ई'
अत्रै छै परदेश कमा
किछु लऽ किछु गमा
दस दिनक तातिल पर
मालिकक कड़ा शासन छै

दू दिन आना दू दिन जाना
(ठीक सऽ ने खाना
(हिक भरि ने पीना)
सिरिफ बचछाहा छओ दिन मजा
रोजे भूमका
फेनू ठुमका
चलि जाइ छै निरमोहिया
ओ फेनू भूलि जाइए निट्हाइ
जे हमर क्यो सिउँथो छूने छै
हमर जुआनी के पीने छै
परदेशी पहुना के देखि
ओ बनभुआर रहैए
नव सऽ सांइ डेबैए
फेनू छोड़ैए
बेर-बेर सोचैए/औनाइए
किछु नहि फुराइ छै
जीवनक ऐ नीयति पर

अपने बरैए
अपने बुताइए

.....
.....की होइ छै शादी-बियाह
सांइ-बहुक जिनगी
किछु नजि बुझै छै
मोने-कुमोने
नव पुरुष डेबैए
कुच्छो ने बुझैए
अहिनातिये जीबैए
परदेशी पहुना के देखि